इकाई-I

1. कबीर

रचनाकार

कबीर के जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत। कबीर ने विधिवत शिक्षा नहीं पाई थी परंतु सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि कबीर की रचनाएँ मुख्यतः **कबीर ग्रंथावली** में संगृहीत हैं किंतु कबीर पंथ में उनकी रचनाओं का संग्रह **बीजक** ही प्रामाणिक माना जाता है। कुछ रचनाएँ 'गुरु ग्रंथ साहेब' में भी संकलित हैं।

कबीर अत्यंत उदार, निर्भय तथा सद्गृहस्थ संत थे। राम और रहीम की एकता में विश्वास रखने वाले कबीर ने ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया। उन्होंने अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की। ईश्वर-प्रेम, ज्ञान तथा वैराग्य, गुरुभक्ति, सत्संग और साधु-महिमा के साथ आत्मबोध और जगतबोध की अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। कबीर की भाषा की सहजता ही उनकी काव्यात्मकता की शक्ति है। जनभाषा के निकट होने के कारण उनकी काव्यभाषा में दार्शनिक चिंतन को सरल ढंग से व्यक्त करने की शक्ति है।

प्रस्तावना प्रसंग

नर नारायण स्वरूप है, सारी दुनिया में परमेश्वर भरा है। इस परमेश्वर की सेवा हमारे हाथों होनी चाहिए। परमेश्वर की पूजा यानी दीन-दुखी जनों की सेवा।

–आचार्य विनोबा भावे

प्रश्न

1. विनोबा जी परमेश्वर की सेवा किसे मानते हैं?
2. आप किस प्रकार की सेवा करना चाहेंगे?
3. समाज सुधारक कबीर के बारे में आप क्या जानते हैं?

भूमिका

यहाँ संकलित साखियों में प्रेम का महत्व, संत के लक्षण, ज्ञान की महिमा, बाह्याडंबरों का विरोध आदि भावों का उल्लेख हुआ है। पहले सबद (पद) में बाह्याडंबरों का विरोध एवं अपने भीतर ही ईश्वर की व्याप्ति का संकेत है तो दूसरे सबद में 'ज्ञान की आँधी' के रूपक के सहारे ज्ञान के महत्व का वर्णन है। कबीर कहते हैं कि ज्ञान की सहायता से मनुष्य अपनी दुर्बलताओं से मुक्त होता है।

© SCERT not to be republished

साखियाँ

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।। ।1।

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।। ।2।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।। ।3।

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।। ।4।

हिंदु मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ।। ।5।

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।। ।6।

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।। ।7।

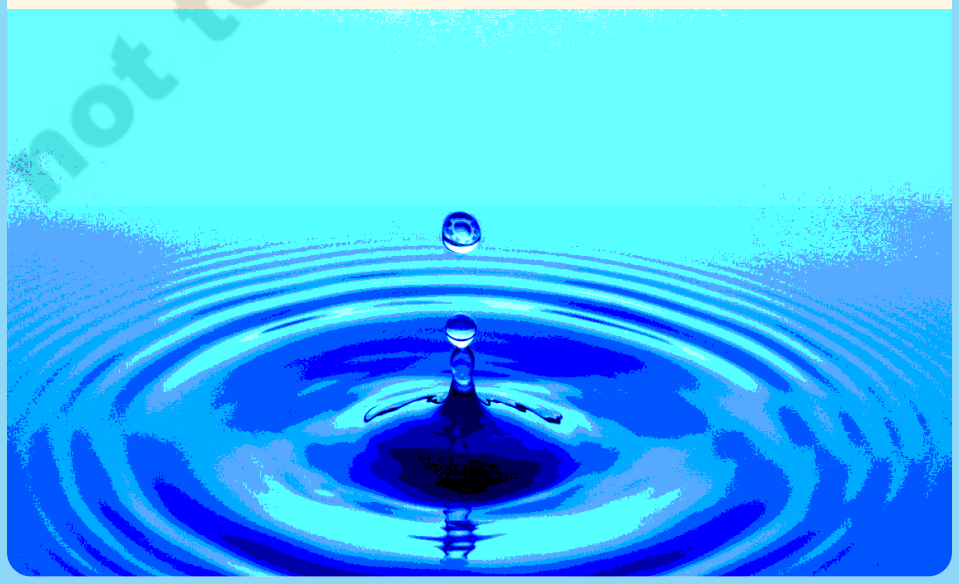

© SCERT not to be republished

सबद (पद)

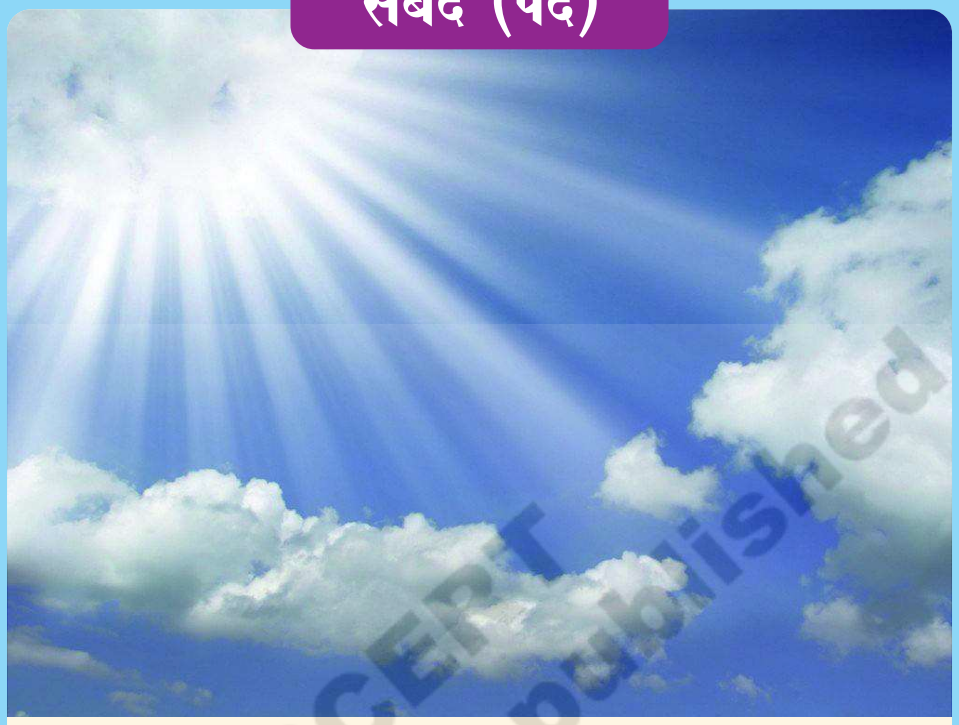

1. मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

2. संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी।।

हिति चित्त की दूवै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।

जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।

कहै कबीर भाँन के प्रगटे, उदित भया तम खीनाँ।।

© NCERT not to be republished

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. कबीर के दोहे नीतिपरक और उपदेशात्मक होते हैं, जिनका हमारे जीवन में बहुत महत्व है। घर के बड़े भी हमें इस प्रकार के उपदेश देते रहते हैं, जैसे– समय पर खेलने, घूमने, बाहर के सामान खाने आदि से रोकना। ऐसा वे इसलिए करते हैं क्योंकि वे हमारा भला चाहते हैं। हमें बड़ों की बातों का अनुसरण क्यों करना चाहिए? चर्चा कीजिए।
2. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? इस बारे में अपने विचार दीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. यह किस दोहे का संदेश है?
   क. जो ईश्वर–भक्ति में लीन हो जाता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं भटकता।
   ख. हमें परमात्मा के रहस्य को बिना समझे धार्मिक आडंबरों के बंधन में नहीं फँसना चाहिए।
2. कवि ने सच्चे प्रेम की क्या कसौटी बताई है?
3. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्व दिया है?
2. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?
3. कबीर ने ईश्वर को सब स्वाँसों की स्वाँस क्यों कहा है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

नीचे दिए गए कबीर के दोहे पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगो, बहुरि करैगो कब।।1।।
धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।।2।।

1. पहले दोहे का भाव क्या है?
2. दूसरे दोहे का भाव बताइए।
3. दोनों दोहे कबीर ने ही लिखे हैं। उन्होंने परस्पर विरोधी बातें क्यों कही होंगी?

© NCERT not to be republished

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

I. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?
2. ज्ञान का हमारे जीवन में क्या महत्व है?
3. कबीर ने धार्मिक आडंबरों का खंडन किया है लेकिन साथ-ही साथ वे ईश्वरीय सत्ता को भी स्वीकार करते हैं। आप किस प्रकार की भक्ति में विश्वास रखते हैं? अपने विचार लिखिए।
4. आज भी समाज में अनेक अंधविश्वास हैं। उन्हें दूर करने लिए आप क्या करना चाहेंगे?
5. धार्मिक सद्भावना सामाजिक एकता की कड़ी है। स्पष्ट कीजिए।

II. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।
2. प्रेम और ज्ञान के बारे में कबीर के विचारों पर प्रकाश डालिए।
3. कबीर के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

इस पाठ से कुछ सूक्ति वाक्यों का निर्माण कीजिए। उसे चार्ट पर लिखकर दीवार पत्रिका पर लगाइए।

उदाहरण : महानता श्रेष्ठ कुल से नहीं, श्रेष्ठ कर्मों से प्राप्त होती है।

❖ प्रशंसा

कबीर आज से लगभग छह सौ वर्ष पहले थे। किंतु आज भी हम उनके दोहे पढ़ते हैं। तब से आज तक समाज में अनेक परिवर्तन हुए किंतु उनके उपदेशों की उपयोगिता आज भी है। वर्तमान समाज में जहाँ कि तीव्र गति से मूल्यों का निरंतर ह्रास हो रहा है, वहाँ कबीर जैसे संतों के उपदेशों का क्या महत्व है?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए। उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपख

परियोजना कार्य

कबीरदास एक समाजसुधारक कवि के रूप में विख्यात हैं। उनकी तरह के किसी एक अन्य कवि की कोई एक रचना खोज कर लिखिए।

© SCERT not to be republished

इकाई-I

2. वह आवाज़

रचनाकार

विष्णु प्रभाकर हिंदी के प्रतिष्ठित नाटककार व कहानीकार हैं। इनके अतिरिक्त उन्होंने जीवनी, लघुकथा साहित्य में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इनकी पहली लघुकथा **सार्थकता** मुंशी प्रेमचंद द्वारा संस्थापित/संपादित **हंस** पत्रिका में जनवरी 1939 के अंक में प्रकाशित हुई थी। इनके अब तक 'जीवन पराग', 'आपकी कृपा है' और 'कौन जीता कौन हरा' नामक तीन लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन तीनों ही संग्रहों में लघुकथाएँ और बोध कथाएँ, दोनों साथ-साथ रखी गई हैं। इनकी कहानियों में मनुष्य-मनुष्य के बीच बनाई गई सीमाओं पर सहज व्यंग्य किया गया है, इनकी कुछ रचनाएँ भावनात्मक धरातल पर आकर सांप्रदायिक भेदभाव को भुलाने की प्रेरणा देती हैं। विष्णु प्रभाकर की सन् 1963 के बाद लिखी लघुकथाएँ मुख्य रूप से मानवीय संवेदनाओं की रचनाएँ हैं। उन्होंने द्वंद्व के माध्यम से छिपे शुभ और सुंदर तत्वों को उभारने का कलात्मक प्रयास किया है। इन रचनाओं की ताकत इनकी सजग सरलता व सहजता में है।

प्रस्तावना प्रसंग

हर किसी के भीतर
एक गीत सोता है।
जो उसी का
प्रतीक्षामान होता है।
कि कोई उसे छूकर जगा दे।
जमी परतें पिघला दे
और एक धार बहा दे।
– अज्ञेय

प्रश्न

1. 'हर किसी के भीतर एक गीत सोता है।' का क्या अभिप्राय है?
2. सबको अपने मन की बात सुननी चाहिए। इस बारे में आपका क्या विचार है?
3. हमारा मन हमें बुरे काम करने से कैसे रोकता है?

भूमिका

प्रस्तुत कथा में एक बालक के सामान्य अपराध पर उसके मन में मचलते द्वंद्व की झलक मिलती है। वह द्वंद्व निरंतर उसका पीछा करता रहता है। जबतक वह अपने भीतर की आवाज़ को पहचान कर अपराध स्वीकार नहीं कर लेता, उसे संतोष नहीं मिलता।

© SCERT not to be republished

मंटू जब स्कूल से लौटा तो वह बहुत थका-थका सा था। घर के दरवाज़े में प्रवेश करते ही वह अपनी माँ को मुस्कराते हुए पाता था। आज उसकी माँ वहाँ नहीं थी। वह अंदर घुसा चला आया। उसने अपने कमरे में जाकर बस्ता पटका और माँ की तलाश में निकल पड़ा। उसका जी कर रहा था कि वह झपट कर माँ के गले से लिपट जाये और रोना मुँह बनाकर उसे डाँट पिलाये, ''आज तुम दरवाज़े पर क्यों नहीं मिली? मुझे ज़ोरों की भूख लग रही है।''

भूख की याद आते ही उसे लगा कि वह जैसे सचमुच ही भूखा है। रोज़ ऐसा होता था। स्कूल से आने पर माँ उसे खाने के लिए दे देती थी, लेकिन आज सब कुछ उलट-पुलट हो गया। आखिर बात क्या है? माँ कहाँ गयी?

सोचता-सोचता वह रसोई के पास वाले कमरे में जा पहुँचा। वहीं बैठकर वे लोग खाना खाया करते थे। वे लोग बहुत अमीर नहीं थे। उनके घर में बढ़िया सी खाने की मेज़ भी नहीं थी लेकिन फिर भी जिस दिन किसी का खाना होता, उस दिन दो-तीन छोटी-छोटी मेज़ें जोड़कर उन पर चादर बिछा दी जाती थी और खाना लगा दिया जाता था।

अचरज से मंटू ने देखा कि आज भी सब कुछ उसी तरह लगा हुआ है। ज़रूर कोई खाने पर आने वाला होगा? तब तो बड़ा अच्छा, बढ़िया-बढ़िया चीज़ें खाने को मिलेंगी। यह सोचते-सोचते उसकी निगाह मेज़ पर गयी। उस पर सजा था खाने का सामान- सेब, चीकू, संतरे, रसगुल्ले, दालबीजी इत्यादि-इत्यादि।

उसने सोचा, माँ ज़रूर रसोईघर में समोसे बना रही होगी। हाँ, रामू भी दिखाई नहीं देता। वह ज़रूर बाज़ार गया होगा। पिताजी शायद अभी तक दफ़्तर से नहीं आए। वे मेहमान को लेकर आएँगे। वे हमेशा ही ऐसा करते हैं, पर पम्मी अभी तक क्यों नहीं आई? ज़रूर उसके स्कूल में आज कोई खास बात है।

उसे लगा जैसे वह अकेला है। आसपास कोई नहीं है। सामने फल और मिठाई देखकर उसके पेट में ज़ोर-ज़ोर से चूहे कूदने लगे।

तभी उसने सुना- जैसे कोई उसका नाम लेकर धीरे से पुकार रहा है- ''मंटू!''

मंटू चौंक पड़ा। उसने एकदम घूम कर पीछे की ओर देखा, लेकिन वहाँ तो कोई भी नहीं था।

तब तक वह मेज़ के बिल्कुल पास आ पहुँचा। अब वह सबकुछ भूल गया। उसने हाथ बढ़ाकर चीकू उठाया। एक रसगुल्ला लिया और इधर-उधर देखकर उसने दोनों चीज़ें खाईं। लेकिन बार-बार उसे ऐसा लगता रहा जैसे किसी ने उसका नाम लेकर पुकारा है- ''मंटू, तुमने ठीक काम नहीं किया। यह चोरी है। तुमने माँ से नहीं पूछा।''

इतने में चीखती-चिल्लाती उसकी बड़ी बहन पम्मी भी वहाँ आ पहुँची। उसने तेज़ी से अपना बस्ता पटका और बोली, ''अरे, मंटू भइया! जानते हो आज हमारे स्कूल में क्या हुआ?'' मंटू ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह अपने में खोया रहा। पम्मी ने यह देखकर पूछा, ''अरे, मंटू भइया! तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो? मम्मी कहाँ हैं?''

मंटू तल्खी से बोला, ''मैंने मम्मी को नहीं देखा।''

पम्मी बोली, ''तो आओ, हम देखते हैं। आज अशोक चाचा चाय पर आने वाले हैं। वह उन्हीं के लिए समोसे बना रही होगी।''

यह कहती हुई पम्मी रसोई की ओर भागी। मंटू उसके पीछे-पीछे चला।

माँ रसोई घर में नहीं थी। दोनों बच्चे निराश होकर लौट रहे थे, तभी उन्होंने माँ को आते हुए देखा। वह मुस्कराई और बोली, ''मुझे ज़रा देर हो गई। आज तुम्हारे अशोक चाचा आ रहे हैं। उनको हमारे मुहल्ले की बरफी बहुत अच्छी लगती है। वही लेने गई थी। अच्छा, आओ, कपड़े बदलो, हाथ-मुँह धोओ। मैं तुम्हारा नाश्ता तैयार करती हूँ।''

दोनों बच्चे तैयार होने के लिए चले गए। पम्मी ज़ोर-ज़ोर से कहानी पर कहानी सुनाती रही, लेकिन मंटू बराबर कुछ सोचता रहा। बराबर कहीं खोया रहा। उसने अपने कपड़े बजाय खूँटी पर टाँगने के एक कोने में फेंक दिए। हाथ-मुंह धोते समय दो बार लोटा उसके हाथ से छूट कर गिरा।

यहाँ तक कि चाचा के आने पर भी उसकी उदासी दूर नहीं हुई, उसे खुश करने के लिए चाचा ने कई गीत सुनाए, किन्तु वह नहीं हँसा। उस रात उसने एक सपना देखा- चीकू और रसगुल्ला उसके पेट में कूद रहे हैं और कह रहे हैं, ''मंटू, तुमने हमें अपने मम्मी से बिना पूछे खाया था। तुमने ठीक काम नहीं किया।''

वह सवेरे उठा, किन्तु वह अब भी प्रसन्न नहीं था। उस दिन उसने स्कूल का काम भी मम्मी से ही कराया। स्कूल में सबसे पहला पीरियड गणित का था। आज उसके सारे सवाल ठीक थे। अध्यापक ने प्रसन्न होकर उसकी पीठ थपथपाई और कहा, ''मंटू, तुम होशियार होते जा रहे हो। इस तरह मेहनत करोगे तो क्लास में फर्स्ट आओगे।''

मंटू ने अध्यापक की बातें सुनी। वह चुप रहा। उसे लगा जैसे किसी ने उसे पुकारा है, मंटू तुमने फिर गलत काम किया।

© SCERT not to be republished

मंटू चौंक पड़ा। लेकिन जितना ही वह चौंकता आवाज़ उतनी ही तेज़ होती। उसने साफ-साफ सुना। आवाज़ कह रही थी, ''मंटू, तुमने ठीक काम नहीं किया। सवाल तुमने अपने आप नहीं किये हैं। अपनी मम्मी से कराए हैं।''

मंटू ने सोचा, ''आखिर ये आवाज़ कहाँ से आती है? क्या मेरे अंदर से आती है? क्या रात के सपने की तरह सवाल भी मेरे पेट में बैठे हुए बोल रहे हैं?''

मंटू को लगा जैसे उसे पसीना आ रहा है, वह मशीन की तरह सीट से उठा और अध्यापक जी की मेज़ के पास आ गया। वह धीरे से बोला, ''सर! मैं आपको एक बात बताना भूल गया था।''

अध्यापक ने पूछा, ''क्या बात?''

मंटू ने धीरे से कहा, ''सर! ये सवाल मैंने नहीं, मेरी मम्मी ने किए थे।''

अध्यापक ने मंटू को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर उसकी आँखों में झाँका और मुस्कराकर बोले, ''तो क्या हुआ! आज तुमने अपनी मम्मी से पूछकर किए हैं, तो कल अपने आप कर लोगे। मुझे खुशी है कि तुमने सच बात बता दी।''

मंटू को लगा जैसे एक ही क्षण में सबकुछ पलट गया है। वह बिल्कुल हल्का हो गया है। मास्टर जी जो कुछ पढ़ा रहे हैं, वह सब उसे बहुत अच्छी तरह समझ आ रहा है। उसे बहुत खुशी हुई। वह दिन भर प्रसन्न रहा, लेकिन बीच-बीच में मिठाई की बात उसे याद आती रही।

छुट्टी मिलने पर वह सदा की तरह भागता हुआ घर आया। देखा, माँ दरवाज़े पर खड़ी मुस्करा रही है। वह उसके गले से चिपट गया। मंटू बोला, ''मम्मी, मम्मी मैं तुम्हें एक बात बताना भूल गया था। कल जब मैं घर आया था तो तुम मुझे यहाँ नहीं मिली थी। मुझे बड़ी भूख लग रही थी। तुमसे बिना पूछे मैंने एक रसगुल्ला और एक चीकू उठाकर खा लिया।''

मम्मी एक क्षण को गंभीर हुई, फिर मुस्करा कर बोली, ''तो कल तुमने चोरी की थी, लेकिन कोई बात नहीं। देर से सही, तुमने मुझे बता दिया। आओ, कपड़े बदलो। मैं तुम्हारे लिए नाश्ता लगाती हूँ। लेकिन, हाँ बेटे, तुम्हें अपना अपराध स्वीकार करने के लिए किसने कहा?''

मंटू ठिठका फिर बोला- ''पता नहीं मम्मी! तब से बराबर कोई मुझसे कह रहा है- 'मंटू तुमने गलती की है।' असल में मम्मी, वह चीकू और रसगुल्ला मेरे पेट में बैठे-बैठे बोल रहे हैं। सपने में मैंने उन्हें ही देखा था।''

मम्मी का चेहरा खिल उठा, वह बोली, ''मंटू, यह तुम्हारी अपनी ही आवाज़ है। जब कोई बुरा काम करता है तो वह आवाज़ तुरंत उसे चेता देती है।''

मंटू बोला, ''मम्मी, मैंने अध्यापक से भी कह दिया था कि आज ये सवाल मेरी मम्मी ने किए हैं, मैंने नहीं। वे बहुत खुश हुए।'' यह सुनते ही दोनों हाथ आगे बढ़ाकर मम्मी ने मंटू को अपनी छाती में भर लिया। फिर उसके गालों को बार-बार चूमती हुई बोली, ''तुम बहुत अच्छे हो, बहुत ही भोले और सच्चे हो।''

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. मंटू की तरह यदि आपने कोई गलती की जिससे आपके माता-पिता नाराज़ हुए हों तो ऐसी घटना बताइए।
2. यदि मंटू ने माँ से पूछकर खाया होता तो क्या माँ उसे मना करती? बड़ों से पूछकर या उन्हें बताकर काम करने से क्या लाभ है? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. पाठ पढ़कर बताइए कि निम्नलिखित वाक्य किसने कहा?
   क. आज तुम दरवाज़े पर क्यों नहीं मिली।
   ख. अरे मंटू भैया! तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो?
   ग. इसी तरह मेहनत करोगे तो क्लास में फर्स्ट आओगे।
2. मंटू जब स्कूल से घर पहुँचा तो उसे खाने की मेज पर क्या-क्या चीज़ें दिखाई दीं?
3. मंटू ने मम्मी और अध्यापक के सामने अपनी गलती कैसे स्वीकार की?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. मंटू की माँ ने उसके चाचा के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की थीं?
2. स्कूल से छूटने के बाद मंटू जब घर आया तो उसकी माँ दरवाज़े पर खड़ी दिखाई नहीं दी। उस समय उसके मन में क्या-क्या विचार आए होंगे?
3. मंटू अपने आप को बिल्कुल हल्का क्यों महसूस करने लगा?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

अनुच्छेद पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

अल्फ्रेड बर्नार्ड नोबेल का नाम कौन नहीं जानता। उनका जन्म 1833 में स्टॉकहोम में हुआ। लगातार अस्वस्थ रहने के कारण वे बराबर अपनी माँ के सामीप्य में बने रहे। माँ-पुत्र में असीम प्यार और लगाव था, जो जीवन भर बना रहा। माँ अपने दुर्बल एवं भावुक बेटे को मानसिक रूप से अत्यंत सबल बनाना चाहती थीं। इसलिए बाइबल और अन्य धर्मग्रंथों से प्रेरित कथाएँ पढ़-पढ़कर सुनाया करतीं। उनका विश्वास था कि उनका बेटा शारीरिक रूप से दुर्बल व अस्वस्थ रहते हुए भी संसार में कुछ अद्भुत कार्य करेगा।

© SCERT not to be republished

नोबेल एक विचारशील व्यक्ति थे। वे अपने और दूसरों द्वारा किए कार्यों, उनके व्यवहारों के बारे में सोचते रहते। उनपर चिन्तन-मनन करते। सर्वदा अपना आत्मविश्लेषण किया करते। वे दूसरों की बातों को तो महत्व देते ही थे, साथ ही साथ अपने मन की आवाज़ को भी अनसुनी नहीं करते। यही मार्ग उन्हें एक महान खोज की ओर ले गया। वे अपने आविष्कारों के कारण संसार भर में विख्यात हो गए। लेकिन वे मानवीयता के लिए भी बहुत कुछ करना चाहते थे। वे चाहते थे कि लोग वैज्ञानिक आविष्कारों के साथ-साथ सामाजिक कार्यों के लिए भी प्रेरित हों। इसके लिए उन्होंने अपने जीवन भर की कमाई का वसीयतनामा करवा दिया जिसके द्वारा आज भी नोबेल पुरस्कार देने की परंपरा कायम है।

1. नोबेल अपनी माँ के सामीप्य में अधिक क्यों बने रहे?
   - क. क्योंकि उन्हें देखभाल की विशेष आवश्यकता थी।
   - ख. क्योंकि वे बड़े डरपोक थे।
   - ग. क्योंकि माँ उन्हें कहानियाँ सुनाती थीं।
   - घ. क्योंकि वे महान बनना चाहते थे।
2. नोबेल ने क्या वसीयत की?
   - क. उनकी धन-संपत्ति का समाज कल्याण के लिए उपयोग हो।
   - ख. उनकी धन-संपत्ति आविष्कारों में लगाई जाए।
   - ग. उनके आविष्कार का प्रचार उनके धन के माध्यम से किया जाए।
   - घ. उनकी धन-संपत्ति का कलाओं के विकास के लिए उपयोग हो।
3. नोबेल अपने मन की आवाज़ को अधिक महत्व क्यों देते थे?
4. नोबेल को उनकी माँ धर्मग्रंथों से प्रेरित कथाएँ क्यों सुनाया करती थीं?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. मंटू चोरी से मिठाई खाने के बाद उखड़ा-उखड़ा रहने लगा। आप से कोई गलती हो जाए तो आपको कैसा लगता है?
2. अपने मन की बात दूसरों को बताने से मन हल्का रहता है। यह स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद है। कैसे?

© SCERT not to be republished

3. मंटू ने रसगुल्ला और चीकू खाने की बात अपनी माँ को किस प्रेरणा के आधार पर बताई? उसको यह प्रेरणा कैसे मिली?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. अपराध स्वीकार कर लेने के बाद मम्मी और अध्यापक ने मंटू के संबंध में क्या सोचा होगा?
2. मंटू का चरित्र चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

पाठ के आधार पर मंटू, मम्मी और पम्मी का वार्तालाप लिखिए।

❖ प्रशंसा

अपनी गलती मान लेना अच्छे लोगों की निशानी है। ऐसा क्यों कहा जाता है? अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
   - पेट में चूहे कूदना
   - खोए रहना
   - डाँट पिलाना
   - पीठ थपथपाना
2. आपको पढ़ते समय मालूम हुआ होगा कि कुछ शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं और कुछ स्त्री जाति का। जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराएँ, उन्हें पुल्लिग और जो स्त्री जाति का बोध कराएँ उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। अप्राणी वस्तुओं के लिंग का निर्धारण व्यवहार के आधार पर होता है यद्यपि इनके भी नियम उपलब्ध हैं। कुछ अप्राणीवाचक शब्दों के उदाहरण देखिए-

   रसगुल्ला - पुल्लिग

   मिठाई - स्त्रीलिंग

   - पाठ में ऐसे अप्राणी शब्दों की सूची बनाइए। लिंग लिखिए।

परियोजना कार्य

पाठ में मेहमान को मेज़ पर खाना परोसने की बात दर्शाई गई है। अपने घर के बड़ों से पूछकर बताइए कि उनके समय में खाना परोसने की कौन-कौनसी पद्धतियाँ प्रचलित थीं? उनके बारे में लिखिए।

© SCERT not to be republished

इकाई-I

3. वृंद

रचनाकार

वृंद मध्यकालीन युग के सरल, सुबोध एवं प्रभावपूर्ण कवियों में प्रथम श्रेणी में गिने जा सकते हैं। उनका प्रभाव जन-मानस पर उतना ही है जितना किसी मंच के कवि का श्रोताओं पर पड़ता है।

वृंद का पूरा नाम वृंदावन था। परंतु कविता करते हुए इन्होंने अपने को वृंद कहा है। इनका जन्म बीकानेर के मेंड़ता नामक स्थान पर हुआ था। कहा जाता है कि वे औरंगज़ेब और उनके पुत्र मुअज़्ज़न के दरबार में राज्याश्रित कवि थे। मुअज़्ज़न के पुत्र और औरंगज़ेब के पौत्र अज़ीमुश्शान के अध्यापक रहे हैं। उनके साथ इन्हें अनेक स्थानों का भ्रमण करने का अवसर मिला। इनकी मृत्यु किशनगढ़ में हुई थी।

वृंद की रचनाएँ हैं- **वृंद विनोद सतसई, नीति सतसई, गायक सतसई, भाव पंचाशिका, वचनिका, पवन पचीसी।**

इनके साहित्य में जनसामान्य की वाणी दिखाई देती है। वृंद के दोहे बहुत प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। इन दोहों में व्यक्ति अथवा समाज-सुधार, जीवन-आदर्शों आदि का बहुत ही सरल भाषा में वर्णन किया गया है। वृंद के दोहे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। वृंद की रचना-शैली मुक्तक है। इनकी शैली में गंभीरता अथवा जटिलता नहीं है। जो कुछ कहा गया है वह हृदयस्पर्शी और प्रभावपूर्ण है।

प्रस्तावना प्रसंग

बुरे लगत सिख के वचन,
हिये बिचारौ आप।
करुबे भेसज बिन पिये,
मिटै न तन को ताप।।

प्रश्न

1. सीख के वचन कैसे लगते हैं?
2. कवि की बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?
3. हमारे जीवन में सीख के वचन का क्या महत्व है?

भूमिका

आधुनिक समाज में तेजी से हो रहे नैतिक मूल्यों के ह्रास की चुनौती से निपटने के लिए वृंद के दोहों की विशेष उपयोगिता है। इस महत्व को ध्यान में रखते हुए उनके कुछ दोहे प्रस्तुत हैं। आइए इन्हें पढ़ें। इनकी उपयोगिता को समझें और इनकी नीतियों को अपनाएँ, साथ ही साथ साहित्यिक रसास्वादन करें।

वृंद के दोहे

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत जुद्ध में, नहिं सिंगार सुहात।। ।1।

प्रान तुषातुर के रहे, थोरेहूँ जलपान।
पीछे जलभर सहस घट, डारे मिलत न प्रान।। ।2।

रहे समीप बड़ेन को, होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त है, वृच्छ बराबर बेल।। ।3।

मधुर वचन तेजात मिटे, उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सो मिटे, जैसे दूध उफान।। ।4।

सबै सहायक सबल के, कोई न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय।। ।5।

जैसे बंधन प्रेम को, तैसो बंधन और।
काठहि भेदे कमल को, छेद न निकरे भौर।। ।6।

प्रकृति मिले मत मिलत है, अनमिलते न मिलाय।
दूध दही से जमत है, कांडी ते फटि जाय।। ।7।

उत्तम जन के संग में, सहजे ही सुखभासि।
जैसे नृप लावै इतर, लेत सभा जनवासि।। ।8।

ज्योति सरूपी हिये बसै, सब शरीर में ज्योति।
दीपक धरिये ताक में, सब घर आभा होति।। ।9।

भेस बनाये सूर को, कायर सूर न होय।
खाल उढ़ाए सिंह की, स्यार सिंह नहि होय।। ।10।

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. वृंद ने कहा है कि मधुर वचन के प्रयोग से अभिमानियों का अभिमान कम हो जाता है। गर्व करना हमारे लिए किस प्रकार हानिकारक सिद्ध हो सकता है। चर्चा कीजिए।
2. समय पूर्ण होने के बाद कार्य करने की गणना असफलता में होती है। आप अपना काम समय पर करने के लिए क्या उपाय करेंगे?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. यह किस दोहे का संदेश है?
   - क. सही जगह पर सही बात शोभा देती है।
   - ख. अब पछताए क्या होत जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।
   - ग. भले की संगति में रहने से भलाई ही होती है।
2. भौंरा कमल के फूल को छेद कर बाहर क्यों नहीं निकल पाता?
3. शेर की खाल पहनने से कोई व्यक्ति शेर नहीं हो जाता। यह उदाहरण वृंद ने अपने किस दोहे में दिया है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. सब शक्तिशाली व्यक्ति का साथ क्यों देते हैं?
2. वृंद के अनुसार प्रकृति के खिलाफ़ जाने से काम बिगड़ जाता है। उन्होंने इसे किस प्रकार समझाया है?
3. "ज्योति सरूपी हिये बसै, सब सरीर में ज्योति।" इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति में रहना किस प्रकार लाभदायक है? इस बारे में वृंद ने क्या कहा है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

रहीम द्वारा रचित निम्नलिखित दोहे पढ़िए। पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन।।1।।
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।2।।

प्रश्न :

1. पावस ऋतु में कोयल क्यों मौन साध लेती है?
2. रहीम ने सज्जन व्यक्ति की तुलना किससे की है?
3. 'बिन अवसर की बात' और 'वर्षा ऋतु में कोयल का मौन हो जाना' में क्या समानता है?

© SCERT not to be republished

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. जो छात्र समय पर अपना कार्य नहीं करते, उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है?
2. मीठे वचन से चारों ओर सुख फैलता है। इससे बिगड़े काम भी बन जाते हैं। इसके विपरीत कठोर वचन बोलने से क्या परिणाम हो सकते हैं?
3. आप अच्छी संगति किसे मानेंगे? धनवान की संगति को या विद्वान की। अपने उत्तर का कारण बताइए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. वृंद ने अपने दोहों के माध्यम से जीवन की किन सच्चाइयों पर प्रकाश डाला है?
2. वृंद अपनी नीति सिद्ध करने के लिए उसका एक व्यावहारिक उदाहरण देते हैं। ऐसा वे क्यों करते होंगे? इसी प्रकार उनके दोहों की अन्य विशेषताएँ लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

इन दोहों का गायन प्रस्तुत कीजिए। अपनी अनुभूति डायरी में लिखिए।

❖ प्रशंसा

आज के वैज्ञानिक युग के प्रभाव में इंसान यांत्रिक होता जा रहा है। उसकी सामाजिकता और नैतिकता कहीं खोती जा रही है। इन्हें बनाए रखने के लिए आप क्या प्रयास करना चाहेंगे?

भाषा की बात

वृंद ने **जुद्ध** शब्द का प्रयोग किया है, जिसका प्रचलित रूप **युद्ध** है। इसी प्रकार के कुछ और शब्द पाठ से चुनिए और उनका प्रचलित रूप लिखिए।

परियोजना कार्य

कुछ महापुरुषों के नीति संबंधी अनमोल वचन संकलित कीजिए और लिखिए।

© SCERT not to be republished

इकाई-I

4. तुम कब जाओगे, अतिथि!

रचनाकार

शरद जोशी का जन्म सन् 1931 में मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में हुआ। इनका बचपन कई शहरों में बीता। कुछ समय तक ये सरकारी नौकरी में रहे, फिर इन्होंने लेखन को ही आजीविका के रूप में अपना लिया। इन्होंने आरंभ में कुछ कहानियाँ लिखीं, फिर पूरी तरह व्यंग्य-लेखन ही करने लगे। व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य साहित्य को प्रतिष्ठा दिलाने वाले प्रमुख व्यंग्यकारों में शरद जोशी भी एक हैं।

शरद जोशी की प्रमुख व्यंग्य-कृतियाँ हैं- 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'तिलस्म', 'रहा किनारे बैठे', 'दूसरी सतह', 'प्रतिदिन'। दो व्यंग्य नाटक हैं- 'अंधों का हाथी' और 'एक था गधा'।

शरद जोशी की भाषा अत्यंत सरल और सहज है। मुहावरों और हास-परिहास का हल्का स्पर्श देकर इन्होंने अपनी रचनाओं को अधिक रोचक बनाया है। धर्म, अध्यात्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण, कुछ भी शरद जोशी की पैनी नज़र से बच नहीं सका है। इन्होंने अपनी व्यंग्य-रचनाओं में समाज में पाई जाने वाली सभी विसंगतियों का बेबाक चित्रण किया है। पाठक इस चित्रण को पढ़कर चकित भी होता है और बहुत कुछ सोचने को विवश भी।

प्रस्तावना प्रसंग

मेहमाँ जो हमारा होता है,
वो जान से प्यारा होता है।

प्रश्न

1. मेहमाँ से क्या तात्पर्य है?
2. गीत पंक्तियाँ और चित्र के भाव तुलना कीजिए।
3. क्या आज भी मेहमान को जान से प्यारा माना जाता है?

भूमिका

प्रस्तुत पाठ 'तुम कब जाओगे, अतिथि' में शरद जोशी ने ऐसे व्यक्तियों की खबर ली है, जो अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के घर बिना कोई पूर्व सूचना दिए चले आते हैं और फिर जाने का नाम ही नहीं लेते, भले ही उनका टिके रहना मेज़बान पर कितना ही भारी क्यों न पड़े। अच्छा अतिथि कौन होता है? वह, जो पहले से अपने आने की सूचना देकर आए और एक-दो दिन मेहमानी कराके विदा हो जाए या वह, जिसके आगमन के बाद मेज़बान वह सब सोचने को विवश हो जाए, जो इस पाठ के मेज़बान निरंतर सोचते रहे।

© SCERT not to be republished

आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि?

तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो ना! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है तो यह चौथा दिन है, तुम्हारे शतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?

उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुसकराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया था। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्जियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाज़ी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया। हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। उसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था। जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। पर तुमने ऐसा नहीं किया।

तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, ''मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।''

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी। तुम्हारे सामीप्य की वेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था। पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

''किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे।?'' मैंने कहा। मन ही मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है।

''कहाँ है लॉण्ड्री?''

''चलो चलते हैं।'' मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा।

''कहाँ जा रहे हैं?'' पत्नी ने पूछा।

''इनके कपड़े लॉण्ड्री पर देने हैं।'' मैंने कहा।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर दी थी। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों ठहरेगा।

और आशंका निर्मूल नहीं थी, अतिथि! तुम जा नहीं रहे। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। तुम्हारे भारी भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। तुम्हें देखकर फूट पड़नेवाली मुसकराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं। कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए। परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी ज़िक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। सौहार्द अब शनैः शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ। बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि?

कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, ''कब तक टिकेंगे ये।''

मैंने कंधे उचका दिए, ''क्या कह सकता हूँ!''

''मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ। हलकी रहेगी।''

''बनाओ।''

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए। अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा। तुम्हारे-मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुज़र रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि!

© SCERT not to be republished

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है न! मैं जानता हूँ। दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं। होम को इसी कारण स्वीट होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफ़त भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है।

अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की पड़ी किरण होगी। आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे। मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूँगा और लड़खड़ा जाऊंगा। मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। तुम लौट जाओ अतिथि! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे, उसके पूर्व तुम लौट जाओ!

उफ़, तुम कब जाओगे, अतिथि?

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. प्रसिद्ध उक्ति है- अतिथि देवो भवः। इसके पक्ष-विपक्ष में चर्चा कीजिए।
2. आज की बदली हुई परिस्थिति में अतिथि के आगमन पर हमारा क्या उत्तरदायित्व है?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्यख्या कीजिए।
   क. अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।
   ख. लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें।
   ग. मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।
2. निम्नलिखित भाव से संबंधित पंक्तियाँ कहानी में ढूँढ़िए और उन्हें रेखांकित कीजिए।
   क. लेखक द्वारा बढ़िया भोजन करवाना, सिनेमा दिखाना

© NCERT not to be republished

ख. अतिथि की बात पर लेखक की पत्नी की आँखें बड़ी-बड़ी हो जाना।

ग. अतिथि के आगमन की आरंभिक अवस्था में लेखक के साथ विविध विषयों पर चर्चा।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. लेखक ने मेहमान की तुलना एस्ट्रॉनाट्स से क्यों की?
2. पति और पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?
3. "अतिथि सदैव देवता नहीं होता, मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।" इस कथन से आप क्या समझते हैं?
4. लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?
5. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए और क्यों?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

नीचे प्रेमचंद की कहानी 'सवा सेर गेहूँ' का अंश दिया जा रहा है। पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

एक दिन संध्या समय एक महात्मा ने आकर उसके द्वार पर डेरा जमाया। तेजस्वी मूर्ति थी, पीताम्बर गले में, जटा सिर पर, पीतल का कमंडल हाथ में, खड़ाऊँ पैर में, ऐनक आँखों पर संपूर्ण वेश उन महात्माओं का-सा था, जो रईसों के प्रासादों में तपस्या, हवागाड़ियों पर देवस्थानों की परिक्रमा और योग सिद्धि प्राप्त करने के लिए रुचिकर भोजन करते हैं। घर में जो जौ का आटा था, वह उन्हें कैसे खिलाता? प्राचीन काल में जौ का चाहे जो महत्व रहा हो, पर वर्तमान युग में जौ का भोजन सिद्ध पुरुषों के लिए दुष्प्राप्य होता है। बड़ी चिन्ता हुई महात्माजी को क्या खिलाऊँ, पर गाँव भर में गेहूँ का आटा न मिला। गाँव में सब मनुष्य ही मनुष्य थे, देवता एक भी न था, अतएव देवताओं का खाद्य पदार्थ कैसे मिलता? सौभाग्य से गाँव के विप्र महाजन के यहाँ से थोड़े से गेहूँ मिल गये। उनसे सवा सेर गेहूँ उधार लिया और स्त्री से कहा पीस दे। महात्मा ने भोजन किया और लंबी तानकर सोये। प्रातःकाल आशीर्वाद देकर राह ली।

प्रश्न 1. महात्मा जी के आगमन पर चिंता क्यों हुई?

2. आगंतुक के घर के मालिक से क्या संबंध रहे होंगे?
3. "गाँव में सब मनुष्य ही मनुष्य थे, देवता एक भी न था, अतएव देवताओं का खाद्य पदार्थ कैसे मिलता?" इसके माध्यम से प्रेमचंद ने किस प्रकार का व्यंग्य किया है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. यदि आप अतिथि बनकर कहीं जाते हैं तो आपकी क्या अपेक्षाएँ होती हैं?

2. घर आए अतिथि को आप अपनी कौन-कौनसी वस्तुएँ प्रसन्नता पूर्वक देना चाहेंगे?
3. गाँव और शहरों के आतिथ्य सत्कार में आपको क्या अंतर दिखाई देता है?
4. आपकी दृष्टि में अच्छे अतिथि के क्या लक्षण हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. "संबंधों के संक्रमण के दौर से गुज़रना" इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।
2. लेखक ने अतिथि को क्या-क्या सुविधाएँ प्रदान कीं?
3. आपके यहाँ एक सप्ताह के लिए यदि आपके नाना-नानी आकर रहें तो आप उनकी किस प्रकार सेवा करेंगे?

❖ सृजनात्मक कार्य

इस कहानी को संवाद रूप में लिखिए। उसका कक्षा-कक्ष में अभिनय कीजिए।

❖ प्रशंसा

"मेहमाँ जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है।" भारतीय संस्कृति की महानता में इस विचार की प्रमुख भूमिका रही है। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति की कुछ विशेषताएँ लिखिए।

भाषा की बात

1. पर्याय शब्दों के संदर्भ में बेमेल छाँटिए।

चाँद – शशि, सोम, अनल, सुधाकर

अतिथि – अदिति, आगंतुक, मेहमान, पाहुन

दिवस – दिन, वार, वासर,

कमल – सरोज, जलज, पंकज, कुटज

अंतरंग – घनिष्ठ, दोस्ताना, मैत्रीपूर्ण, अंतःपुर

2. पाठ में आए इन वाक्यों में **चुकना** क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए।

क. तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित **कर चुके**।

ख. तुम मेरी काफ़ी मिट्टी **खोद चुके**।

ग. आदर सत्कार के जिस उच्च बिन्दु पर हम तुम्हें ले **जा चुके** थे...

घ. शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के **विषय चुक गए**।

ङ. तुम्हारे भारी भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली **जा चुकी** और तुम यहीं हो।

परियोजना कार्य

अतिथि सत्कार के संदर्भ में कोई कहानी ढूँढ़कर पढ़िए और उसे अपने शब्दों में कक्षा में सुनाइए।

© SCERT not to be republished

पढ़िए - आनंद लीजिए

कटुक वचन मत बोल

कहा जाता है कि वाणी तो सभी को मिली है किंतु बोलना हर एक को नहीं आता। किससे कैसे बोलें, कब क्या बोलें, यह जानना हम सबके लिए बहुत ज़रूरी है। ऊटपटाँग बोल देने का परिणाम कभी-कभी बहुत बुरा होता है। कड़वा बोलने के कारण महाभारत का युद्ध हुआ था। इसलिए हमें सदा समय, स्थान का ध्यान रखकर बात करनी चाहिए। मीठा बोलने में हमारा कुछ खर्च नहीं होता। मीठा बोलकर हम दूसरों का दिल जीत सकते हैं। इससे हमें लोगों की सहानुभूति ही मिलती है। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने बोलते समय बरती जानेवाली सावधानियाँ बताई हैं और सलाह दी है कि यदि आपकी वाणी कठोर है तो उसे कोमल बनाइए।

दास-प्रथा के दिनों में एक मालिक के पास अनेक गुलाम थे, जिनमें एक था लुकमान। लुकमान था तो गुलाम, किन्तु वह बड़ा बुद्धिमान था। उसकी प्रशंसा इधर-उधर फैलने लगी। एक दिन उसके मालिक ने उसे बुलाया और कहा- ''सुनते हैं, तुम बहुत होशियार हो। मैं तुम्हारा इम्तहान लूँगा। अगर तुम कामयाब हो गए, तो तुम्हें गुलामी से छुट्टी दे दी जायेगी। अच्छा जाओ। एक बकरे को काटो और उसका जो हिस्सा सबसे बढ़िया हो, उसे ले आओ।''

लुकमान ने वैसा ही किया। एक बकरे को कत्ल किया और उसकी जीभ लाकर मालिक के सामने रख दी। कारण पूछने पर लुकमान ने कहा- ''अगर शरीर में जीभ अच्छी हो, तो फिर सब अच्छा-ही-अच्छा है।''

मालिक ने कहा- ''अच्छा, इसे उठा ले जाओ और अब बकरे का जो हिस्सा सबसे बुरा हो, उसे ले आओ।''

लुकमान बाहर गया, लेकिन थोड़ी देर में उसने जीभ लाकर मालिक के सामने फिर से रख दी। कारण पूछने पर लुकमान ने कहा- ''अगर शरीर में जीभ नहीं हैं, तो फिर सब बुरा-ही-बुरा है।''

एक दूसरी घटना है। एक जिज्ञासु चीनी दार्शनिक कंफ़्यूशियस के पास पहुँचा और उसने उनसे पूछा- ''यह बताइए कि दीर्घजीवी कौन होता है?''

वृद्ध कंफ्यूशियस मुस्कराए और बोले- ''जरा उठकर मेरे पास आइए और मेरे मुँह में देखिए। जीभ है या नहीं?''

जिज्ञासु ने देखकर कहा- ''जी हाँ, जीभ तो है।''

कंफ्यूशियस ने फिर कहा- ''अच्छा, अब देखिए कि दाँत हैं या नहीं?

जिज्ञासु ने देखकर कहा- ''दाँत तो एक भी नहीं है।''

अब कंफ्यूशियस ने कहा- ''जीभ तो दाँत से पहले पैदा हुई थी। उसे दाँतों से पहले जाना चाहिए था। ऐसा क्यों नहीं हुआ?''

''मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है। आप ही बताइए।''

कंफ्यूशियस बोले- ''जीभ कोमल है, दाँत कठोर है। जिसमें लचीलापन होता है, जो नम्र होता है, वह अधिक समय तक जीता है, जीवन में जीतता है।''

ये दो कहानियाँ हैं, किंतु एक ही सत्य को उद्घाटित करती हैं और वह यह कि जीवन में वाणी का बहुत बड़ा ही महत्व है।

© NCERT not to be republished

वाणी तो सभी को मिली हुई है, परन्तु बोलना किसी-किसी को ही आता है। बोलते तो सभी हैं, किन्तु क्या बोलें, कब बोलें- इस कला को बहुत कम लोग जानते हैं। एक बात से प्रेम झरता है, दूसरी बात से झगड़ा होता है। कड़वी बात ने संसार में न जाने कितने झगड़े पैदा किये हैं। जीभ ने दुनिया में बहुत बड़े-बड़े कहर ढाये हैं। जीभ होती तो तीन इंच की है, पर वह पूरे छह फीट के आदमी को मार सकती है। संसार के सभी प्राणियों में वाणी का वरदान मात्र मानव को मिला है। उसके सदुपयोग से स्वर्ग पृथ्वी पर उतर सकता है और उसके दुरुपयोग से स्वर्ग भी नरक में परिणत हो सकता है। भारत-विनाशकारी महाभारत का युद्ध वाणी के गलत प्रयोग का ही परिणाम था।

इसीलिए सदा-सदा से यह कहा जाता है कि किसी का हृदय अपनी कटुवाणी से विचलित मत करो। कदाचित मंदिर और मस्जिद तोड़नेवाले को क्षमा मिल जाय तो मिल जाय, किंतु हृदय-मंदिर तोड़ने वाले को क्षमा कहाँ?

मधुर वचन हैं औषधी, कटुक वचन हैं तीर।
श्रवण द्वार हैं, संचरैं, सालय सकल शरीर ।
कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि करै तन छार।
साधु वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार।।

स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री अपने विनम्र स्वभाव और मधुर वाणी के लिए प्रसिद्ध थे। प्रयाग में एक दिन उनके घर पर किसी नौकर से कोई काम बिगड़ गया। श्रीमती शास्त्री का क्रोध में आना स्वाभाविक था। उन्होंने नौकर को बहुत डाँटा और उसके साथ सख्ती से पेश आईं। शास्त्री जी भोजन कर रहे थे। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा- ''अपनी जबान क्यों खराब कर रही हो? लो, तुम्हें एक शेर सुनाऊँ-

कुदरत को नापसंद है सख्ती जबान में।
इसलिए तो दी नहीं हड्डी जबान में।''

और फिर मुस्कराते हुए शास्त्रीजी ने आगे कहा- ''जब एक शेर सुना है, तो एक दूसरा शेर भी सुन लो-

जो बात कहो, साफ हो, सुथरी हो, भली हो।
कड़वी न हो, खट्टी न हो, मिश्री की डली हो।।''

कहना न होगा, इन शेरों को सुनकर श्रीमती शास्त्री का क्रोध का पारा बहुत नीचे उतर गया था।

यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि सभी बातें ऐसी नहीं हो सकतीं, जो दूसरों को प्रिय ही लगें। सत्य कभी-कभी कड़वा होता है। कुछ बातें कहनी ही पड़ती हैं, किंतु ऐसे अवसर पर होना यह चाहिए कि बात भी कह दी जाए और उसमें वह कड़वाहट ने आने पाए, जो दूसरे के हृदय को विदीर्ण कर देती है। ज़रूरी नहीं है कि जीभ की कमान से सदा वचनों के बाण ही छोड़े जाएँ। वाक् चातुरी से कटु सत्य को प्रिय और मधुर बनाया जा सकता है।

किसी राजा ने स्वप्न देखा कि उसके सारे दाँत टूट गए हैं। ज्योतिषियों से फल पूछा। एक ने कहा- ''राजन, आप पर संकट आने वाला है। आपके सब संबंधी और प्रियजन आपके सामने ही एक-एक कर मर जाएँगे।

दूसरे ज्योतिषी ने कहा, ''आप अपने सारे संबंधियों और प्रियजनों से अधिक काल तक संसार का सुख-ऐश्वर्य भोगेंगे।'' दोनों कथनों का सत्य एक ही है, किन्तु पहले ज्योतिषी को कारावास मिला और दूसरे को पुरस्कार।

सुबह-सुबह बुलबुल ने ताजे खिले फूल से कहा- ''अभिमानी फूल! इतरा मत। इस बाग में तेरे जैसे बहुत फूल खिल चुके हैं।'' फूल ने हँसकर कहा- ''मैं सच्ची बात कर नाराज़ नहीं होता, पर एक बात है कि कोई भी प्रेमी अपने प्रिय से कड़वी बात नहीं कहता।''

यदि आपकी वाणी कठोर है, तीखी है, कर्कश है तो उसे सुधारिए, मीठी बनाइए, नहीं तो लोकप्रिय व्यक्तित्व का सपना अधूरा ही रह जायेगा।

- श्री रामेश्वर दयाल दुबे

© NCERT not to be republished